ब्रह्मार्पणम् (भोजन मन्त्र)

इन पाठों के बारे में

स्रोत	हर पाठ अपने स्रोत, परम्परा और संस्करण के साथ छपा है। अन्य परम्पराओं और संस्करणों में शब्दों में थोड़ा अन्तर हो सकता है।
लिप्यन्तरण	रोमन पंक्ति देवनागरी से बना IAST लिप्यन्तरण है (ā = दीर्घ आ, ṃ = अनुस्वार, ḥ = विसर्ग, ś/ṣ = श/ष, c = च)। हिन्दी, अवधी और ब्रज पाठों में शब्द के अन्त का मौन 'अ' नहीं लिखा जाता। लिप्यन्तरण में वैदिक स्वर नहीं दिखते।

ब्रह्मार्पणम् (भोजन मन्त्र)

प्रकार	दैनिक प्रार्थना
संस्करण	प्रचलित पाठ
परम्परा	अनेक परम्पराओं में प्रचलित
स्रोत	श्रीमद्भगवद्गीता (महाभारत, भीष्म पर्व) — Bhagavad Gita 4.24
आभार	भगवद्गीता; सार्वजनिक।

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर्ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।

brahmārpaṇaṃ brahma havirbrahmāgnau brahmaṇā hutam |

ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं ब्रह्मकर्मसमाधिना ॥

brahmaiva tena gantavyaṃ brahmakarmasamādhinā ||

अर्थ

अर्पण ब्रह्म है, हवि ब्रह्म है, ब्रह्म रूपी अग्नि में ब्रह्म द्वारा आहुति दी जाती है। जो हर कर्म में ब्रह्म को देखता है, वह ब्रह्म को ही प्राप्त होता है।

स्रोत-सहित पारम्परिक पाठ। किसी निश्चित परिणाम का दावा नहीं।

इस दस्तावेज़ के बारे में

इस दस्तावेज़ के पाठ सार्वजनिक (पब्लिक डोमेन) पारम्परिक भक्ति पाठ हैं या हमारी टीम द्वारा लिखे गए हैं, और अपने दर्ज स्रोत व संस्करण के साथ छपे हैं।

अर्थ हमारे शब्दों में संक्षिप्त व्याख्याएँ हैं, विद्वत्तापूर्ण अनुवाद नहीं। किसी पाठ के अपने श्लोकों में बताए लाभ पाठ का अंश हैं, गारण्टी नहीं।

कुछ साधनाएँ परम्परा से गुरु-मार्गदर्शन में की जाती हैं। अपनी परम्परा के मार्गदर्शन का पालन करें।